अब हँस लो

बेटा : पिताजी ! आज कौन-सी तारिख है ?

पिताजी : अच्छा बेटा। जरा अखबार उठा लो। अभी बता देता हूँ।

बेटा : कोई फायदा नही, यह अखबार तो कल की है।

सीना : मै सोच रही थी सरिता। अगर बिजली का आविष्कार न होता तो आज यह टेलिविजन कैसे देखते ?

सरिता : अरी मुर्ख ! बिजली नही भी तो क्या ? हम मोम बत्ती जलाकर टेलिविजन देख लेंगे ।

पत्नी : अजी बडे नेता बन फिरते हो । अपनी पत्नी का जरा भी खयाल नही रखते। एक अच्छा जोडा चप्पल भी नही।

पति : अरे , परसो मुझे बताया होता। कल के भाषण मे कितने चप्पल बरसाये गये थे। उनमे से एक अच्छा जोडा ले आते।

एम. आईशा बीवी
बी.काम.सेकण्ड इयर

अस्तित्वकता

आजकल बुद्धिजीवियों में सबसे बडा विवाद विषय रहा है। आज का युग ऐसे मोड पर है जहाँ भगवान के अस्तित्व पर भी प्रश्न चिहन लगा है। क्योंकि विज्ञान का इस युग पर इतना अधिक प्रभाव है कि वह हमारे अंग अंग में रमता जा रहा है और चाहकर भी भगवान के अस्तित्व स्वीकार करने मे अपने को असमर्थ पाते है। जिन लोगो को भगवान पर आस्था है और उनको अस्तित्व को स्वीकार करते है वही लोग विज्ञान के तर्क से कभी कभी सन्देह के दायरे में पडकर डगमगाते है क्योकि विज्ञान हर वस्तू के (चाहे जड हो या चेतन) अस्तित्व का प्रमाण माँगता है।

वैसे तो सभी वर्ग के लोग किसी न किसी रूप में ईश्वर की आराधना करते है चाहे कृषण - राम का रूप हो या ईसा मसीह को हों या खुदा का। अस्तित्व तो है ही । यह अलग बात है कि वह साकार को या निराकार। वैसे बडे बडे वैज्ञानि भी काम की सफलता के लिए ईश्वर के सामने न नतमस्तक होते नजर आते है। उन्हे यह विश्वास होने लगाता है कि उनकी सफलता के पीछ भगवान का अनुग्रह ही है।

इस पृथ्वी पर कई तरह के मनुष्य रहते हैं। एक वे जो अच्छे बुरे हाति लाभ हर चीज दैविक मान लेते है और उन लोगों की घाष्टि में जो कुछ होता है बस खुदा या ईश्वर की दया या दान से होता है। पर कुछ ऐसे लोग भी है जो कर्म को प्रमुख मानते है। पर असमय में जब कबी उन्हे कठिनाईयो का सामना करता पडता है और जब सारी आशाएँ टूट जाती है तो ते ईश्वर का नाम लेने लगते है और उनकी शरण में जाना चाहते है। एक तीसरे प्रकार के मनुष्य भी पाये जाते है जो खुदा का अस्तित्व मानते तक नही। ये नास्तिक कहे जाते है। इनकी घष्टि में सब कुछ मनुष्य और विज्ञान है। पर कभी कृचक्रो के बीच फँसकर अपने को दो राहे पर पाते है। संस्कृति उन्हे नही छोडती और आधुनिकता भी। इन दोनो के बीच अन्तर्द्धन्द होने लगता है। जिसके कारण उनकी दशा बडी दयनीय हो जाती है। किसी ने सच ही कहा था कि जो खुदा पर आस्था रखते है उन्हें उसके अस्तित्व का कोई प्रमाण नहीं चाहिए ओर जो खुदा पर आस्था नही रखते उन्हे किसी प्रकार विश्वास दिलाया भी नहीं जक सक्ता।

❀

माँ की ममता लिए हुए
पितृ स्नेह की छाया।
यही तो है सीखा हमने
सबको गले लगाना।

ध्रुव के समान धून के पवके
बुध्द की भाँति त्यागी
लव-कुश से बलशाली
युद्ध से नही डरेंगे।

एक लव्य से शिस हम
करते है गुरू-सेवा
सत्य कहा सन्तो ने , मिलता
सेवा से ही मेवा।

अभिमन्यू का खून है बहता
अपनी नस-नस मे।
कदम बट गए बार तो
पीछे नही हटाते हम।

एक दिन बच्चे ही थे
नानक, तिलक व गाँधी।
ऐसे ही बन जाये हम भी
और रोकेगे आँधी-तूफान।

जीवन-पथ की बाधाओ से
हमें जूझना आता।
हम बालक है युग निर्माता,
भारत के भाग्य-विधाता।